रामधारी सिंह दिनकर जी का जीवन परिचय

भूमिका :- रामधारी दिनकर एक भारतीय कवि, लेखक, निबंधकार, स्वतंत्रता सेनानी और संसद के सदस्य भी थे। पद्म विभूषण सम्मानित श्री रामधारी सिंह आधुनिक काल के कवियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख गायक हैं। इनके काव्य में ओज, तेज, प्रेम और सौन्दर्य की प्रधानता है। डा॰ सावित्री सिन्हा इनकी काव्य चेतना पर प्रकाश डालती हुई लिखती है
"दिनकर आग और राग के कवि है।"

जन्म तथा माता-पिता : इनका जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर (बेगुसराय) जिले के एक छोटे से गाँव सिमरिया में हुआ था। यह एक किसान परिवार से संबंधित थे। इनके पिता जी का नाम बाबू रवि सिंह और माता जी का नाम मनरूप देवी था।

बचपन : रामधारी जब मात्र 2 वर्ष के थे जब उनके पिता जी का देहांत हो गया था जिनके बाद पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनकी माता के ऊपर आ गयी थी। रामधारी दिनकर का जीवन बचपन में ही कठिनाइयां काल से पूर्ण था

शिक्षा : रामधारी सिंह दिनकर का जीवन बचपन में ही कठिनाइयों से पूर्ण था। सर्वप्रथम इन्होंने संस्कृत के एक पंडित के पास शिक्षा प्राप्त की जिसके बाद पास के ही एक बोरो नामक गाँव में आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गंगा घाट पार करके काफी दूर तक

पैदल जाना पड़ता था। 1928 में इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास दर्शनशास्त्र और राजनीति विज्ञान में बी.ए. की। साथ ही इन्होंने साहित्यकार के रूप संस्कृत बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं में महारत हासिल की थी।

वैवाहिक जीवन: रामधारी सिंह का विवाह श्यामदेवी नामक एक लड़की से हुआ। विवाह के एक वर्ष पहले ही इन्होंने स्नातक की डिग्री हासिल की थी। श्यामदेवी एक गृहिणी थी, लेकिन रामधारी सिंह के साहित्यिक कार्यों में उनका भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके तीन बच्चे थे उनके दो पुत्र शशिभूषण और रविशंकर था और पुत्री उमा था। इन्होंने अपने तीनों संतान बच्चों को अच्छी शिक्षा दी और जीवन में सफल बनाया।

व्यवसाय / कार्यक्षेत्र: बी.ए. के बाद आजीविका चलाने के लिए एक स्कूल में अध्यापक बन गए थे। जिसके बाद 1934 में बिहार सरकार के सब रजिस्टार के रूप में कार्य किया। उस समय अंग्रेज सरकार भारत पर अपना राज जमाने की सोच रही थी। तब इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ बहुत सी कविताएं लिखी। आजादी के बाद यह मुजफ्फरपुर नगर के लंगट सिंह कॉलेज विश्वविद्यालय में हिंदी ~~विभाग~~ ~~विभागाध्यक्ष~~ के रूप में नियुक्त किए गए ~~थे~~ प्राध्यापक

1952 में जब प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो इन्होंने इनको राज्यसभा के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया 1965 में भारत सरकार द्वारा उनको हिंदी सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया। यहाँ उन्होंने 6 साल तक कार्य किया।

साहित्य प्रेरणा : रामधारी जी सर्वप्रथम पहले तुलसीदास जी (रामचरित मानस) से इनको प्रेरणा मिली। इसके अतिरिक्त रामधारी जी मैथिली शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं विश्वस्तर पर स्वतन्त्र वादियों के संघर्ष, गांधी जी के कार्य और विचार, लेनिन के नायकत्व में निष्पादित क्रान्ति, भगत सिंह की और गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादतें, इत्यादि से प्रेरित हुए।

सम्मान / पुरस्कार : रामधारी सिंह को उनके साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए।

1948 : काव्य कृति कुरुक्षेत्र के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा से पद्मभूषण पुरस्कार।

1959 : गद्य कृति संस्कृति के

चार अध्याय, के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार

1961: काव्य रचना उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार।

1963: दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि।

1967: रूस के लेनिन पुरस्कार से सम्मानित किया।

1972: हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए पद्मविभूषण पुरस्कार।

निधन: 24 अप्रैल 1974 को हृदय गति रुकने के कारण उनका निधन हुआ। वह रात्रि में तिरुपति में भगवान व्यंकटेश्वर के दर्शनों से लौट कर, बंगलोर में शरीर त्याग दिया।

रचनाएँ

रामधारी सिंह, दिनकर की प्रमुख रचनाओं में 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी', 'रश्मिरथी', 'चक्रव्यूह', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी', 'तिल कुसुम', 'परशुराम की प्रतीक्षा', आदि मुख्य है।

काव्य की विशेषताएँ

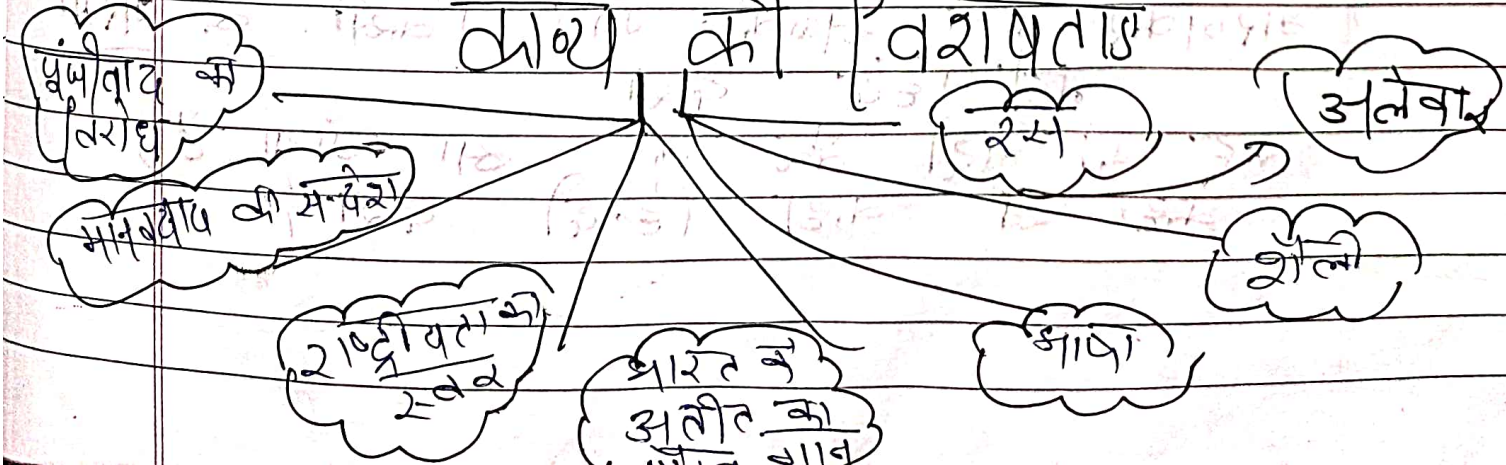

Page No.
Date : / /20

पूंजीवाद का विरोध : दिनकर ने पूंजीवाद का डटकर विरोध किया और शोषित वर्गों के प्रति संवेदना प्रकट की है। उन्होंने दीन हीन व्यक्तियों की अभावग्रस्त जिन्दगी का चित्रण इस प्रकार किया है

" श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की सूखी हड्डी से चिपक,
ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं।"

मानववाद का संदेश : दिनकर के काव्य में मानवतावाद का सन्देश मिलता है। दिनकर ने अपने 'कुरुक्षेत्र' काव्य में विश्व में सुख शान्ति लाने के लिए मानवतावाद को अपनाने का संदेश व उपदेश दिया है।

राष्ट्रीयता का स्वर : दिनकर एक राष्ट्रीय कवि हैं; इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर ध्वनित होता। वे क्रान्तिकारी राष्ट्रीय कवि हैं। उनकी ओजमयी वाणी का एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

"गरजकर बता सबको मारे किसी के मरेगा
नहीं हिंद देश।
लहू की नदी तैर कर आ गया है,
कहीं से कहीं हिन्दी देश।।"

Page No.
Date: / /20

भारत के अतीत का गौरव-गान :

कवि भारत के स्वर्णिम अतीत का स्मरण करते हुए भारत के विलुप्त वैभव की ओर देशवासियों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहता है।

"वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी शान कहाँ
ओ री उदास गंडकी ! बता
विद्यापति कवि के गान कहाँ !!"

भाषा : दिनकर की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। उसमें अधिकांश तत्सम शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। आपकी भाषा सशक्त, प्रभावशाली और प्रांजल है।

शैली : दिनकर ने अपने काव्य की रचना प्रबन्ध और मुक्तक दोनों शैलियों में की है। रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र और उर्वशी उनके प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य हैं। मुक्तक कविताओं में इन्होंने ओज गुण की व्याप्ति पर विशेष बल दिया है।

अलंकार : रामधारी जी ने अपने काव्य में सभी प्रचलित अलंकारों का बड़ा स्वाभाविक प्रयोग किया है

Page No.
Date : / /20

रस :- उनकी अधिकतर कविताओं में वीर रस की प्रधानता है। उर्वशी में शृंगार रस का चित्रण है

निष्कर्ष :- अतः दिनकर के काव्य में वीरता, उत्साह, ओज और तेज, की प्रधानता है। अपने काव्य द्वारा उन्होंने प्रगतिवाद और मानवतावाद का सन्देश दिया।